

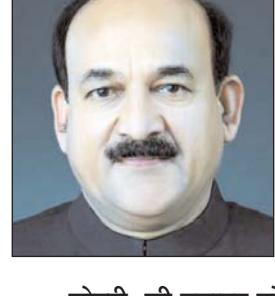
छत्तीसगढ़ के सीएम व डिस्ट्री सीएम तय हो जाने के बाद इंतजार किंवा जा रहा था कि राज्य से किंवा विधायकों को मंत्री बनाया जाएगा। नीं विधायकों के मंत्री पद की शपथ लेने के साथ ही यह इंतजार खत्म हो गया है। वैसे दस विधायकों के मंत्री बनाए जाने हैं, एक मंत्री पद खाली रखा गया है। ही सकता है कि इसे बाद में जरूरत के हिसाब से भरा जाए। मंत्रिमंडल मतलब होता है कि राज्य के सभी वर्गों को सत्ता में हस्सेदारी। राज्य के लोग चाहते हैं कि उनके वर्ग के चुने विधायकों को मंत्री बनाया जाए। पुराने विधायक भी चाहते हैं कि वह अनुभवी है, इसलिए उनको तो मंत्री बनाया ही जाना चाहिए। राज्य मंत्रिमंडल को लेकर सबसे ज्यादा चर्चा इस बात को लेकर थी कि नए विधायकों को ज्यादा मंत्री बनाया जाए। पुराने विधायकों को ज्यादा मंत्री बनाया जाएगा। बनाए गए नौ मंत्रियों में नए व पुराने दोनों को महत्व दिया गया है। नौ मंत्रियों में पांच नए तथा चार पुराने

विधायक हैं। इससे ऐसा लग सकता है कि नए लोगों को थोड़ा सा ज्यादा महत्व दिया गया है, लेकिन एक पद खाली है, उसे किसी पुराने विधायक को देकर संतुलन विद्याली जा सकता है, यह भी हो सकता है कि वह भी नए विधायक को दे दिया जाए। संभागवार देखें तो रायपुर संभाग से बृजमोहन अग्रवाल (सामान्य), टंकराम वर्मा (ओबीसी) सरागजा संभाग से रामविंध वर्मा नेताम (एसटी), लक्ष्मी रजवाडे (ओबीसी), श्याम वर्मा नेताम (एसटी), लक्ष्मी रजवाडे (ओबीसी), लखवासपुर संभाग से ओबीसी, चौधारी (ओबीसी), लखवासपुर लेखवान (ओबीसी), दुर्गा संभाग से दयालदास बघेल (एसटी), बस्तर संभाग से केदाम कश्यप (एसटी) मंत्री बनाए गए हैं। वर्ग के हिसाब से देखा जाए तो सबसे ज्यादा 6 विधायक ओबीसी से मंत्री बनाए गए हैं। वहीं एसटी से 3, सामान्य वर्ग से दो, एसटी बने से एक विधायक मंत्री बनाए गए हैं। पहली बार विधायक बने अरुण साव को डिटी सीएम विजय शर्मा डिटी

अमित शाह का वादा पूरा किया गया है। वहीं विजय शर्मा, लक्ष्मी रजवाडे व टंकराम वर्मा जैसे कार्यकर्ताओं को मंत्री बनाकर अपित शाह ने कार्यकर्ताओं

छत्तीसगढ़ के बेजोड़ मोहरिया पंचराम देवदास

स्मृतिशेष
विजय मिश्र 'अमित'



मोहरी की बनावट को तीन भागों में बांट सकते हैं। पैंगोंग जैसे बनावट इसके अग्रभाग को 'फेर' कहते हैं। आजकल यह लकड़ी के अलावा कांसा, पीतल, स्टील से बनने लगा है। फेर के पीछे अर्थात् मोहरी के मध्य भाग को 'डांडी' कहते हैं। डांडी को

ठोस बांस से बनाते हैं, जिसमें बासुरी की तरह सात आठ छिपे हैं।

मोहरी का सबसे पिछला भाग 'डांडी' को बनाते हैं। डांडी से जुड़ा

मोहरी का सबसे पिछला भाग 'डांडी' को बनाते हैं।

आज अन्यत्री पुष्टियाँ पर

उंगलियाँ सुरों की उत्पत्ति की जाती है। डांडी से जुड़ा

मोहरी का सबसे पिछला भाग 'डांडी' को बनाते हैं।

आज अन्यत्री पुष्टियाँ पर

गोल ढब्बन की तरह 'फिल्मफिली' जुड़ी होती है, जो

कि मोहरिया के पूँक्ते समय

मुंह से निकलती हवा को

सीधे संसारी में भेजते हैं।

सहायक होती है।

इसके लिए खास बास्तव्य

सुविधा ही नहीं अपराध की दुनिया भी इसी

तरह चल रही है। अपराध के साथ चोटी - दामन का साथ पुलिस एवं कानून का बना हुआ है। अस्पताल में छोटी सी बीमारी के इलाज हेतु प्रेस्रेफ करते ही बड़ी दिनों की तरह चलता है। अब तो चिकित्सकों को यह बताते हैं कि हृदयात्मत आने वाला है - जल्दी से जल्दी

भय बिन भरे न जेब हमारी

डॉ सूर्यकांत मिश्र

महाराजा के दौर में पारिवारिक जरूरतें पूरी कर पाना

किसी बड़े युद्ध में विजय प्राप्त करने से मन नहीं है।

पुरानी कहावत है - इश का और जंग - में सब जयजय है। अब यह कहावत भी बदल चुकी है। नई शब्दन कुछ इस तरह सामने आ रही है - भय बिन भरे न जेब हमारी

कहावत है। अब अपनी अपराध की दुनिया भी इसी

तरह चल रही है। अपराध के साथ चोटी -

दामन का साथ पुलिस एवं कानून का

बना हुआ है। अस्पताल में छोटी सी बीमारी

के इलाज हेतु हुते ही बड़ी दिनों की तरह चलता है। अब तो चिकित्सकों को यह बताते हैं कि हृदयात्मत आने वाला है - जल्दी से जल्दी

भय बिन भरे न जेब हमारी

डॉ सूर्यकांत मिश्र

महाराजा के दौर में पारिवारिक जरूरतें पूरी कर पाना

किसी के साथ साधारण गाली - लालोंग भी अब संगीन जरूरी दिया गया है।

पुलिस थानों में लालांग जाने वाली खत्मनाक धाराओं के

बाद बचाव के लिए काला कोट ठीक तरह नजर

आता है जैसे किसी बीमारी के बाद सफेद कोट !

हमारे एक मित्र हैं जो पेशे से बकील हैं, अर्थात्

कालाकार धारी हैं। एक दिन उनसे चर्चा चल निकली

। उन्होंने जो भागे थे अपनी कानूनी कानूनी दिया गया है।

पुरानी आत्म ही हिल गई - कानून के अवार हमारे

उक्त मित्र ने बताया कि अब आपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही पर रेशेंगी और अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी नहीं होती है कि किसी भी मामले में फंसाकर हो जाएगा।

पुरानी आत्म ही अपनी से कानूनी

